Astro-Vision GemFinder Report

नाम	: Sample
लिंग	: स्त्री
जन्म तिथि	: 4 जूलाई, 1991 गुरुवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 08:30:10 PM
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
समय पध्धति	: Standard Time
जन्म स्थल	: Aruppukkottai
रेखांश (Deg.Mins)	: 78.6 पूरब
अक्षांश (Deg.Mins)	: 9.31 उत्तर दिशा

अयनांश	: चित्रपक्ष
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र	: **उत्तर भद्रपाढा**
नक्षत्र पद	: 3
नक्षत्र का देव	: शनि
जन्म राशी	: **मीन**
राशी का देव	: गुरु
लग्न	: मकर
लग्न का देव	: शनि
तिथि	: अष्टमि, कृष्णपक्ष
करण	: वाध
नित्ययोग	: शोभना
सूर्योदय	: 06:02 AM
सूर्योस्त	: 06:42 PM
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: गुरुवार
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 18 Min.

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार

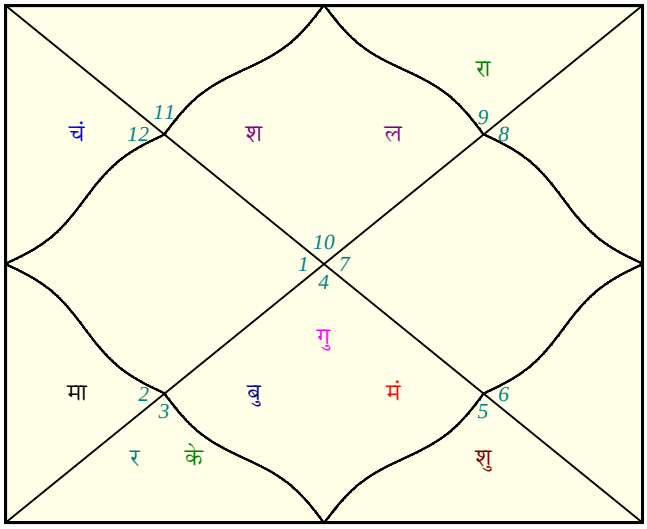

प्रत्येक वस्तु चाहे निर्जीव हो अथवा सजीव, धातु हो, द्रव्य हो या गैस हो उसका मानव शरीर की रक्त संचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त संचार प्रणाली ही मनुष्य के क्रिया कलाप, विचार शक्ति और उसकी उर्जा को प्रभावित करती है। शरीर का नियंत्रण और नियोजन करनेवालै इसी वैज्ञानिक सिद्धांत के कारण मनुष्य पर रत्नों का प्रभाव होता है। रत्न प्रकृति की अद्‌भुत रचना है। अनुसंधान द्वारा यह जाना गया है कि विशेष चयन विधी के द्वारा अगर रत्नों को धारण किया जाय तो जीवन में स्पष्ट और उल्लेखनीय परिवर्तन लाया जा सकता है।

रत्नों के विशेष गुण धर्म के अनुसार अपने साम्य ग्रहों की किरणों को अपने भीतर सोखते हैं और स्वाभाविक प्राकृतिक प्रक्रिया के कारण धारक के शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं।

रत्न क्रूर ग्रहों के कुप्रभाव को कम करते हैं और शुभ ग्रहों के शुभ प्रभाव के शुभत्व को बढ़ावा देते हैं।

जन्म के समय दशा की समतुलना = शनि 6 साल, 0 महीने, 21 दिन

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

दशा के बदनते समय उम्र

दशा	उम्र के प्रारंभ काल में		
बुध	6 साल,	0 महीने,	21 दिन
केतु	23 साल,	0 महीने,	21 दिन
शुक्र	30 साल,	0 महीने,	21 दिन
रवि	50 साल,	0 महीने,	21 दिन
चन्द्र	56 साल,	0 महीने,	22 दिन
मंगल	66 साल,	0 महीने,	21 दिन
राहु	73 साल,	0 महीने,	21 दिन
गुरु	91 साल,	0 महीने,	21 दिन

षड्बल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
437.85	388.76	366.65	310.58	340.57	529.80	359.95
संपूर्ण शडबल (रूप)						
7.30	6.48	6.11	5.18	5.68	8.83	6.00
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.22	1.30	0.87	0.94	1.14	1.36	1.20
संबन्धी स्थानक						
3	2	7	6	5	1	4

विश्लेषण

आपकी कुंडली में ग्रहों की शक्ति या प्रभाव का निर्णय षड्बला से किया गया है।

ग्रह, आपकी कुंडली में षड्बला प्रमाण १ से बलहीन हैं।

आपकी कुंडली में सबसे बलहीन ग्रह है बुध

शुभ भाव:

लग्नाधिपति है शनि
लग्न पीड़ित है। अर्थात लग्न पर कुदृष्टि है।
राशि का स्वामी है गुरु
पीड़ित है। अर्थात राशि के स्वामी पर कुदृष्टी है।
पाँचवें भाव का स्वामी है शुक्र
पांचवे भाव का स्वामी बलहीन है।
नवमे भाव का स्वामी है बुध
नवमा भावाधिपति बलहीन है।
नवमा भावाधिपति पीड़ित है।

अशुभ भाव:

छठा अधिपति बुध है ।
आठवी अधिपति रवि है ।

आपकी दशा परिवर्तन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि आप केतु की महादशा से गुजर रहे हैं। प्रत्येक महादशा में ग्रह की जन्म-लग्न कुंडली में स्थिति ,योग, संयोग राशि के प्रभाव के अनुसार फल प्राप्ति होती है। केतु की महादशा में राशिगत स्थिति के अनुसार इनके कुप्रभाव से बचते हेतु आप लहसुनिया धारण करें। यह आपको अति उत्तम फल प्राप्ति में सहायक होगा।

रत्न धारण की सलाह

१.दशा : केतु

रत्न : लहसुनिया (Cat's Eye)

केरेट में वज़न : ५

रत्न को सोने की अंगूठी में जड़ें।
रत्न को बायाँ हाथ (Left Hand) पर अनामिका (Ring Finger) में पहनिए।
मंगलवार के दिन सूर्योदय के १५ मिनट पश्चात पहनिए।
लहसुनिया (Cat's Eye) रत्न आपको 25-07-2021 तक धारण करना है

यह हल्का पीला रंग किन्तु भूरे रंग की रंगत लिए रहता है। यह एक गरम रत्न है।

रत्न धारण करने के पूर्व सावधानी / मौलिक तैयारियाँ

आज पहली बार जब आप रत्नों को धारण करनेवाले हैं तो यह अवसर खास प्रकार से महत्वपूर्ण माना जाता है। इस संदर्भ में मानसिक तैयारी और शुद्धता यानी स्वच्छता को महत्व देना अनिवार्य बन जाता है। इसलिए अपनी-अपनी धार्मिक मान्यता के अनुसार देव-दर्शन, पाठ पूजा, मंत्रजप इत्यादी करना उचित होगा। अपने माता-पिता, गुरु, देव-देवी इत्यादी के आशीर्वाद अत्यधिक लाभदायी रहेगा।

उपरोक्त प्रक्रियता के लिए उपयुक्त दिन चुना जाये। हर रत्नों के लिए एक निश्चित दिन श्रेष्ठ माना जाता है। उसके अनुसार ही दिनको चुनना उचित होगा। आवास स्थान के सूर्योदय समय को ध्यान में रखा जाये। यह केलेन्डर से प्राप्त होता है। सूर्योदय की जानकारी हिन्दुओं के 'पंचांग' से भी प्राप्त हो सकता है। तथां मन्दिरों से भी यह जाना जा सकता है। प्रभात के ब्रह्म मुहूर्त के समय उठ जाना उचित होगा। यह समय प्रभात के चार बजे से प्रारंभ होता है। सुबह के नित्य और नैसर्गिक कर्मों के बाद (स्नानादी कार्यों के पश्चात) साफ़-सुथरे कपड़े धारण करें। प्रार्थना या ईश्वर चिंतन के बाद मन को शाँत करें। ध्यान की प्रक्रिया इसके लिए युक्त मानी जाती है। अपने कार्यों को निश्चित रूप से किया जाये ताकि निर्धारित समय पर आप अमूल्य रत्न को धारण कर सकें। (जब भी हम पहली बार अमूल्य रत्न को धारण करते हैं तो यह उचित होगा कि यह कार्य अपने माँ-बाप, गुरु अथवा बुज़ुर्गों के सानिध्य में हो। उनका आशीर्वाद हमें सफलता प्रदान करता है।)

रत्न की गुणवता

रत्न किसी विश्वास योग्य स्थान से परख कर लें। रत्न को जिस धातु में धारण करने के लिए कहा गया है उसमें ही धारण करना उचित होगा। रत्न जड़ित अंगूठी अनुभवि सुनार से ही बनवायें। रत्न धारण करने का दिन और समय भी महत्वपूर्ण है। रत्न में 'प्राण-प्रतिष्ठा' करना अति आवशयक है। आप स्वयं साफ-सफाई और स्नान करके पूजा पाठ करके प्राण-प्रतिष्ठा कर सकते हैं। रत्न मे प्राण-प्रतिष्ठा करनी ही चाहिए। रत्न दर्शायी गयी तिथि तक ही धारण किया जाय।

चेतावनी / सावधानी

जिन रत्नों को धारण करने की सलाह प्राप्त होती है वह निश्चित काल के लिए होती है। आपकी जन्म पत्रिका में बताई गई दशा के बदलने से रत्न धारण की प्रक्रिया में परिवर्तन अनिवार्य बन जाता है। साथ-साथ जीवनकाल में आपकी समस्याओं में भी परिवर्तन होता रहता है। इस कारण निश्चित काल परिधी के बाद रत्न धारण की जानकारी करना अनिवार्य है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि अगर एक व्यक्ति रत्नो को अधिक समय तक पहने, तो उसका ज्योतिष युक्त परिहार शक्ति नष्ट हो जाता है । विविध रत्नों का समुचित कालावधि इस प्रकार है । मोती - २ वर्ष, माणिक - ४ वर्ष, मरकत मणि - ३ वर्ष, हीरा - ७ वर्ष, लाल मूँगा - ३ वर्ष, पीला मणि -४ वर्ष, नीलमणि - ५ वर्ष, गोमेदक - ३ वर्ष, लहसुनिया - ५ वर्ष । प्रस्तुत कालावधि के बाद नए रत्न से बना नया अँगूठी निर्देश किया गया है ।

कृपया ध्यान रहे आपकी अगली दशा 25-07-2021पर परिवर्तित होगी।

GemFinder Ver. 11.0.1.0HIN150903

DISCLAIMER:

Although broadly based on Indian Predictive Astrology, we request you to consider this report as an independent work of Astro-Vision Futuretech Pvt. Ltd.ASTRO-VISION astrological calculations are based on scientific equations and not on any specific published almanac. Therefore, comparisons between the calculations made by ASTRO-VISION and those published in almanacs are absolutely unwarranted.Astro-Vision Futuretech Pvt. Ltd. shall not entertain any dispute on differences arising out of such comparisons. Astro-Vision Futuretech Pvt. Ltd. cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report.While we ensure that each report is prepared meticulously and with utmost care, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. In case of any errors our liability is limited to the replacement of the report with a rectified one. The software versions and the predictive text in the reports are subject to continuous modifications, including addition of new chapters. This is necessitated by the nature of the content and our constantly evolving research findings. We have adopted "Chitrapaksha ayanamsa" for all our calculations as it is the most popular and widely used ayanamsa system in India. The astrological calculations and predictions may differ in case a different ayanamsa is used. There are minor variations in the systems and practices followed by different regions of India and we have accommodated some of these variations in the regional language versions. As a result, the reports generated in different languages may not be exact translations. Also, all the language versions are not updated simult